

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473



शिरो-धारा



कटि-वस्ति



योग-आसन



ध्यान



नेत्र-धारा



आयुर्वेदिक चिकित्सा



फिजियोथैरेपी



मिट्टी-चिकित्सा



सेवाधाम चिकित्सालय

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा संचालित

57, जैन मंदिर, रिंग रोड,

इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के पीछे,

सराय काले खाँ बस अड्डा के सामने, नई दिल्ली-110013

दूरभाष : 011-26320000, 26327911, 09999609878



एक्यूप्रेशर

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड, पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से मुद्रित। संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रुपये
दिसम्बर, 2009

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



फूलों से नित हसना सीखो
भौरों से नित घाना

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 12 अंक : 12 दिसम्बर, 09

: मार्गदर्शन :		इस अंक में	
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी		01. आर्ष वाणी	- 5
: सम्पादक मंडल :		02. बोध कथा	- 5
श्रीमती निर्मला पुगलिया,		03. संपादकीय	- 6
: व्यवस्थापक :		04. गुरुदेव की कलम से	- 7
श्री अरुण तिवारी		05. विचार मंथन	- 13
एक प्रति	: 5 रुपये	06. गीतिका	- 17
वार्षिक शुल्क	: 60 रुपये	07. कहानी	- 18
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये	08. विरासत	- 19
: प्रकाशक :		09. गजल	- 21
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)		10. रहस्य-रोमांच	- 22
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240		11. गजल	- 24
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के		12. स्वास्थ्य	- 25
सामने, नई दिल्ली - 110013		13. चिंतन-मनन	- 27
फोन नं. : 26315530, 26821348		14. जानकारी	- 28
Website: www.manavmandir.com		15. बालें तारे	- 29
E-mail: contact@manavmandir.com		16. समाचार दर्शन	- 31
		17. चुटकुले	- 32
		18. झलकियां	- 33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
 डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
 श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
 श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
 श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैकाक
 श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
 श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
 श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
 श्री अमरनाथ शकुलता देवी,
 अहमदगढ़ वाले, बरेली
 श्री कालुराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
 श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
 श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
 श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
 श्रीमती कमला बाई धर्मपल्ली
 स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
 श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
 श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
 श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
 धर्मपल्ली स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
 श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
 श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
 श्री हरवंसलाल ललित मोहन मिचल, मोगा, पंजाब
 श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
 श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री वीरवल दास सिंगला,
 श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
 श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
 श्री देवकिशन मून्डडा विराटनगर नेपाल
 श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
 श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
 श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
 श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
 श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
 श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
 श्री प्रवीण लता मेहता ह्युष्टन
 श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
 श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
 श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
 श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
 श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
 डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
 श्री कमलसिंह-विमलसिंह वैद, लाडनूं
 श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
 श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
 श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
 श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
 डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
 श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
 श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
 श्री देवराज सरोजवाला, हिसार
 श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
 श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
 श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
 श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
 श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
 श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
 लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
 श्री आदीश कुमार जी जैन,
 न्यू अशोक नगर, दिल्ली
 मास्टर श्री वैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

जहेह सीहो व भियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्भि तंभिसहरा भवति।।

-उत्तराध्ययन

जिस तरह सिंह हरिण को पकड़ कर ले जाता है, उसी तरह अन्त समय में मृत्यु भी मनुष्य को उठा ले जाती है। उस समय माता, पिता, भाई आदि कोई भी उसके दुःख में भाग नहीं बंटा सकते- परलोक में उसके साथ नहीं जाते।

रास्ते का पत्थर

एक बार यूनान के महान दार्शनिक संत डायोजिनस एक सड़क के किनारे बैठे थे। सड़क के बीच में एक बड़ा पत्थर पड़ा हुआ था। अनेक राहगीर सड़क पर आते और पत्थर को देखकर दूसरे मार्ग से निकल जाते। जो यात्री अपनी ही धुन में चल रहे होते वह पत्थर से टकरा कर अपनी चोट सहलाते हुए आगे बढ़ जाते। कुछ देर बाद अपनी धुन में चलता एक नवयुवक तेजी से उस तरफ आया और पत्थर से टकरा कर चीखता हुआ गिर पड़ा। अगले ही क्षण वह किसी तरह संभल कर उठा और उठते ही मार्ग में पत्थर डालने वाले व्यक्ति को कोसने लगा। यह देख कर संत डायोजिनस जोर से हंस पड़े। संत डायोजिनस को हंसते देख युवक गुस्से से बोला, 'मुझे चोट लग गई और आपको हंसी सूझ रही है। 'युवक की इस बात पर संत गंभीर होते हुए बोले, 'मैं तुम्हारे गिरने पर नहीं हंसा। तुम्हारी चोट के लिए तो मैं हृदय से दुःखी हूँ किंतु हंसी मुझे तुम्हारी बुद्धि पर आ रही है।' युवक ने पूछा, 'वह कैसे?' संत बोले, 'मैं जब से यहां बैठा हूँ तब से अनेक राहगीर इस मार्ग से गुजरे। कुछ इस पत्थर से टकराए और कुछ बच कर निकल गए। लेकिन किसी ने भी इस पत्थर को हटाने का साहस नहीं किया। तुम तो उन से भी दो कदम आगे निकले। चोट खाकर भी पत्थर हटाने की बजाय पत्थर रखने वाले को कोसते रहे पर तुम्हारी बुद्धि में यह बात नहीं आई कि उस पत्थर को मार्ग से हटा दिया जाए। अरे भलेमानस, पत्थर से तो ठोकर लगती ही है किंतु यदि जरा सी इंसानियत व समझदारी से उस पत्थर को हटा दिया जाए तो मार्ग अत्यंत सुगम हो जाता है।' यह सुनकर वह युवक लज्जित हो गया और फिर उसने संत डायोजिनस के साथ मिलकर उस पत्थर को रास्ते से हटा दिया और उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होकर आगे बढ़ गया।

जीवन में साहित्य का महत्व

पुस्तक का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। पुस्तक से इंसान को ज्ञान होता है। मानव ने सर्वप्रथम पुस्तक का आरंभ अपने अनुभव ज्ञान को विस्मृति से बचाने के लिए किया था। विकास के आदिकाल में पत्ते, ताड़-पत्र, कांस्य पत्र आदि साधन इस ज्ञान संग्रह के सहायक रहे। ज्ञान तथा इतिहास बताता है कि पुस्तकें मानव को अपना अनुभव बढ़ाने में सहायक रही हैं। अपने पूर्वजों की उपलब्धियों को जीवित रखने की जिम्मेदारी भी इन्होंने ही संभाली हुई है। आज के युग में पुरातन काल के वीरों, ऋषियों, नाटककारों और कवियों आदि का पता हम इन्हीं पुस्तकों के सहारे पाते हैं। पुस्तकें ही अन्तर्राष्ट्रीय विचार क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोणों को एक आधार पर सोचने के लिए बाध्य करती हैं। इसका दूसरा रूप है वह है पत्रिकाएं। आज हर संस्था अपनी-अपनी संस्था को आगे बढ़ाने के लिए पत्रिकाएं निकाल रही हैं। पत्रिकाओं ने एक फैशन का रूप भी ले लिया है। दूसरे बहुत सारे लोग पत्रिका का मेटर दूसरी किताबों को देखकर उसका अनुकरण करते हैं। नया कुछ नहीं होता दूसरों का देखकर लिखते रहते हैं। पत्रिकाओं के बढ़ते इस प्रचलन में काफी बढ़ोत्तरी भी हुई है। पत्रिकाएं पढ़ने से ज्ञान, विज्ञान आदि चीजों को जानने और सीखने का मौका मिलता है। ये व्यक्ति के लिए ज्ञान-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है। और यह मानव समाज में क्रांति उत्पन्न करने की क्षमता रखती है। यह अपार-शक्ति, साहस व प्रेरणा का स्रोत है। इससे हमें देश विदेश की जानकारियां भी हासिल होती हैं। पत्रिकाएं हमें शारीरिक, मानसिक, नैतिक विकास, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, स्वावलम्बी बनाकर बुरी आदतों को दूर करने की प्रेरणा देती हैं। अच्छी किताबों और पत्रिकाओं का भी हमारे जीवन में बड़ा योगदान है। ये हमें जिदंगी के अनंत समुद्र में भटकने नहीं देती। सही रास्ता दिखाती हैं। और मंजिल तक पहुंचने में हमारी मदद भी करती हैं।

इंसान के जीवन विकास में अनेक चीजें नियमित बनती हैं। मानव के जीवन विकास में साहित्य का बहुत बड़ा महत्व है। जो लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं वे लोग ज्ञान की बातें संतों से कथावाचकों से सुनकर अपने ज्ञान को जागृत करते हैं। ज्ञान को विकसित करके सही मार्ग का चुनाव करते हैं।

○ निर्मला पुगलिया

महावीर : आधुनिक मनोविज्ञान के प्रकाश में



○ गुरुदेव की कलम से

पचीस शताब्दियों पूर्व जिसका निर्वाण हो चुका, उस व्यक्ति के विचारों से बीसवीं शताब्दी के महानतम मनोवैज्ञानिकों-फ्रॉयड, एडलर और जुंग-के अनुसंधानों की तुलना कहां तक संगत है, यह एक ऐसा प्रश्न है जो अनेक के सामने खड़ा है।

प्राचीन और नवीन वस्तु-जगत् के सन्दर्भ में तो ये अर्थ-पूर्ण हो सकते हैं। विचारों के संदर्भ में नहीं होते, क्योंकि विचार की कसौटी एक ही है और वह है 'सत्य'। इसलिए विचार न प्राचीन होते

हैं न नवीन, वे समीचीन या असमीचीन, सही या गलत हो सकते हैं।

अवचेतन मन की खोज

फ्रॉयड इस शताब्दी का एक महान् मनस्तत्त्ववेत्ता के रूप में विचारों के संसार में अपना स्थायी महत्त्व पा चुका है। यद्यपि उसे अंध-पूजा भी बहुत मिली और उसका अंध-विरोध भी बहुत हुआ, तथापि इसमें कोई संदेह नहीं कि मानव मन के गहरे अंतराल में उतरकर उसने जो सत्य पाया वह खंडित या अपूर्ण हो सकता है, लेकिन असत्य नहीं।

फ्रॉयड को असंयम का पक्षधर कहा जाता है, मुक्त यौनाचार का पुजारी माना जाता है। कुछ सीमा तक फ्रॉयड अपनी शब्दावली के कारण इसके लिए जिम्मेदार भी है। लेकिन मूलतः ऐसा नहीं है कि फ्रॉयड का इस दिशा में स्वच्छंद और असंयत जीवन के प्रति किसी प्रकार का आग्रह रहा हो। जिनकी मानसिक दुर्बलताएं अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं पा रहीं थीं, उन्होंने फ्रॉयड के नाम पर कुंठाओं को छिपाया अवश्य, जिसके लिए फ्रॉयड कहां तक दोषी है, कहा नहीं जा सकता।

फ्रॉयड की पहली खोज थी- अचेतन मन। मनोरोगियों का इलाज करते-करते उसने पाया कि सम्मोहनावस्था में वे जो कहते हैं उससे वह एकदम विपरीत होता है जो वे जागृत स्थिति में कहते हैं। फ्रॉयड को लगा कि चेतन मन की परतों के नीचे मन के कुछ अंधकाराच्छन्न स्तर हैं जिनके बारे में अब तक मनोवैज्ञानिकों को जानकारी ही नहीं है। उसने इसे अचेतन मन कहा। इसका अर्थ यह नहीं है कि मन के ये स्तर अपने आप में

चेतना-शून्य है, बल्कि यह है कि हमारा चेतन मानस इसके बारे में जागरूक नहीं रहता है और उसके बारे में ये जागरूक नहीं होते। जब अचेतन मन का द्वार खुल जाता है चेतन मन के कपाट स्वतः बन्द हो जाते हैं और जब इसका द्वार बन्द होता है तो चेतन मन के कपाट खुल जाते हैं।

आज अचेतन मन के बारे में काफ़ी जानकारी प्राप्त हो गयी है। हमारे शरीर के जो कार्य स्वयंचालित माने जाते हैं, जैसे हृदय का धड़कना, फेफड़ों का फूलना-सिकुडना, रक्त का नाड़ियों में बहना, विविध ग्रंथियों से समय-समय पर स्रावों का शरीर में उपयुक्त स्थलों पर उपयुक्त स्थितियों में होना, जिनके बारे में चेतन मन को जानकारी नहीं रहती, सब अचेतन मन द्वारा पूर्ण जागरूकता से नियन्त्रित एवं संचालित होते हैं। अचेतन मन पर पूर्ण अधिकार पाने के बाद जो स्वयंचालित (इनवॉलेण्टरी) शारीरिक क्रियाएं हैं उनको स्पष्ट अनुभूत करना, भीतर से 'देखना' तथा नियंत्रित एवं संचालित करना सहज हो जाता है। योग-साधना के अन्तर्गत इस दिशा में प्रत्याहार और धारणा की प्रक्रिया से अल्प समय में ही बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

अपेगचित्ते खलु अयं पुरिसे

फ्रॉयड अचेतन मन का प्रथम खोजी नहीं था। मानव के चित्त के अनेक स्तर होते हैं और उनकी अपनी अभीप्साएं होती हैं जो स्वतन्त्र किन्तु समानान्तर चलती रहती हैं-यह बात महावीर ने ढाई हजार वर्ष पूर्व कही थी : 'अपेग चित्ते खुले अयं पुरिसे'। मानव के अनेक चित्त हैं। एक समय में एक ही मन सक्रिय रहता है, एक ही विचार रहता है, एक ही क्रिया अथवा प्रतिक्रिया होती है, यह महावीर ने बहुत पूर्व कहा था जो आज मनोविज्ञान द्वारा प्रमाणपुष्ट तथ्य है। किसी क्रिया का प्रारम्भ, किसी इच्छा का जागरण, किसी वासना का संचेतन होने के बाद उसे निरस्त नहीं किया जा सकता। वह अपनी निष्पत्ति तक पहुंचने के लिए सतत संघर्ष करता ही जाता-महावीर का यह स्पष्ट मन्तव्य अचेतन मन के संदर्भ में पूरा लागू होता है। इसके अलावा फ्रॉयड जिसे लिविडो या वासना कहता है व्यापक अर्थ में, उसे महावीर 'ओघ' संज्ञा के रूप में प्ररूपित करते हैं अर्थात् सबके मन के अचेतन आदिम स्तरों पर पायी जानेवाली मानसिक संरचना जो वासना या एषणामयी होती है।

फ्रॉयड का कहना है : मन के दो स्तर हैं - चेतन और अचेतन। चेतन मन उचित-अनुचित सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक है और पहरा देता रहता है वाणी और क्रिया के सारे द्वारों पर, ताकि अचेतन मन से उठी कोई वासना वाणी या क्रिया के रूप में प्रकट न हो सके जिससे सामाजिक स्तर पर हानि हो। यह मन भय, लालच, अहंकार

तथा सामाजिक-नैतिक अवधारणाओं का बना होता है। यह एक प्रकार का निषेध-यन्त्र है- 'सेंसर' जिसका काम रोकना, जांच करना और तब जाने देना या लौटाना है। हम जिसे अन्तःकरण कहते हैं वह चेतन मन ही है।

अचेतन मन जीवन के आदि से अन्त तक रहता है। सारे शरीर और उसकी हर स्वैच्छिक क्रियाओं, स्वतः संचालित नियन्त्रणों एवं संयोजनाओं का सूत्राधार है। अचेतन मन इच्छाओं, आवेगों, स्मृतियों, भावनाओं, कामनाओं का आगार होता है और किसी बाहरी नियन्त्रण या नियमन को स्वीकार नहीं करता। इससे उठी कामनाएं जब चेतन मन से टकराकर लौट जाती है तो उन्हें अपनी शक्ति से उत्प्रेरित कर बार-बार भेजता है। इससे चेतन मन के स्तर पर आत्महीनता, कुंठाएं, छिपाव, बाध्यता आदि अनेक मनःग्रन्थियां मन और जीवन-व्यवहार के स्तर पर बन जाती हैं।

पागलपन का कारण मानसिक ग्रन्थियां

फ्रॉयड का कहना है कि अचेतन मन की कामनाओं को चेतन मन का अहं अपने बाहरी मानदण्डों के कारण दमित करता है। इससे ग्रन्थियां पैदा होती हैं और व्यक्ति असामान्य हो जाता है। शारीरिक-मानसिक स्तर पर ऐसा व्यक्ति पागल या मनोरोग-ग्रस्त होता है। वह न अपने लिए हितकारी है और न समाज के लिए।

अतः फ्रॉयड दमनमूलक संयम का पक्षधर नहीं है। उसका कहना है : ग्रन्थियों को खोलो तथा नयी ग्रन्थियां बनना रोकने के लिए अचेतन को समझो। उसे चेतन मन की सीमा में लाओ तथा चेतन मन को मुक्त करो उन वर्जनाओं से, जो कुंठाओं को जन्म देती हैं।

फ्रॉयड का मिशन यहीं पूरा हो जाता है। लेकिन कुंठामुक्त मनःस्थिति वर्जनाओं को टुकरा देने के बाद जीवन की सम्यक् दृष्टि के अभाव में असंयम और अनियमितता की ओर अनिवार्यतः ले जाती हैं।

यहां महावीर का स्पष्ट मन्तव्य है कि जब तक अन्तःपरिवर्तन की प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती, आत्मसंयम अपेक्षित रहता है, अन्यथा मानव का जीवन दिशाहीन हो जाता है। फ्रॉयड दमन का विरोधी है। दमन का समर्थन महावीर भी नहीं करते। दमन उत्पाद पैदा करता है। अन्तःकरण में विक्षोभ उत्पन्न करता है। संयम को प्रायः दमन के समानान्तर माना जाता है लेकिन वास्तव में दोनों के मध्य आकाश-पाताल का अन्तर है।

कहां है अन्तर महावीर और फ्रॉयड में

महावीर और फ्रॉयड काफी दूर साथ-साथ चलते हैं। सामाजिक या देशकालगत विविध-निषेधों को वे महत्ता नहीं देते। महावीर दस धर्मों में कुल धम्मे, गाम धम्मे आदि के

अन्तर्गत लोकाचारों की गणना कर छोड़ देते हैं और ये सतत परिवर्तनशील हैं यह भी स्पष्ट कर देते हैं। अतः वर्जनाओं के आधारभूत बनकर ये मानव-मन को कुण्ठित न करें-यह दोनों का स्पष्ट मन्तव्य है।

लेकिन जहां जीवन के मूलभूत नियमों का प्रश्न है, महावीर उन्हें प्रकृति के नियमों की भांति अनिवार्य एवं अपरिहार्य मानते हैं! जैसे हवाका चलना, आग का जलना। महावीर की मान्यता है कि मानव-स्वतन्त्रता एक और अखण्ड है, जैसे मानवता एक और अखण्ड है। अगर एक मानव दूसरे की स्वतन्त्रता को खण्डित कर रहा है तो वह अपनी स्वतन्त्रता या हानिकारक स्वतन्त्रता के हामी नहीं हैं और उससे विरति को स्वस्थ मानसिकता मानते हैं। पूर्ण अनियन्त्रण तो पाशविकता है। महापुरुषों में संयम द्वारा इच्छा-शक्ति और संकल्प बल का विकास होता है। कुंठाएं दुर्बल मन में पैदा होती हैं। महावीर का मार्ग दुर्बल मन के लिए नहीं है। 'पणया वीरा महावीहिं'- मन को मजबूत रखने वाला इस पर आगे बढ़ सकता है। निराधार गतिरोध जैसे कुंठा है वैसे ही निराधार स्वच्छन्दता भी कुंठा है। यहां महावीर और फ्रॉयड के मध्य विचार-वैभिन्न्य का एक बिन्दु आता है।

इसका कारण है और वह यह कि फ्रॉयड के सामने व्यक्ति एक स्वतन्त्र इकाई है और उसकी समस्या का समाधान होना उसके लिए और इस प्रकार व्यक्ति-व्यक्ति की समस्या का समाधान होना सबके लिए काम्य है। लेकिन वह यह भूल गया है कि जिस अबाध स्वच्छन्दता की कीमत पर उसने हर व्यक्ति के लिए कुंठा-मुक्ति का समाधान पाया है वह समाज, अर्थ और राजसत्ता पर टकराएगी। उससे सामूहिक गतिरोध से कुंठाओं का जन्म होगा जो अन्ततः व्यक्ति को ग्रस्त करेंगी और समाज का भयानक विनाश होगा।

व्यक्ति व्यक्ति ही नहीं, समष्टि भी

महावीर की दृष्टि में व्यक्ति एक अलग-अलग इकाई नहीं, उसके पीछे समग्र मानव समाज खड़ा है। अतः महावीर 'समष्टि' को पूरी नजर में रखते हुए सम्पूर्ण मानव जाति के मानसिक-भौतिक हित की बात कहते हैं। मार्क्स समाज के लिए व्यक्ति की बलि देता है। फ्रॉयड व्यक्ति के लिए समाज की बलि देता है। दोनों एक-दूसरे के एकदम विपरीत ध्रुवों पर खड़े हैं। महावीर के मन्तव्य में दोनों अतिवादिता के दो किनारे पर लटक रहे हैं। उनकी प्रकल्पना का समाज एक ऐसा समाज है जिसका हर व्यक्ति शेष सारे व्यक्तियों को अपने अन्तःकरण में एकीभूत कर जाता है तथा शेष सारे व्यक्ति उससे तदात्मीभूत होकर चलते हैं। वहां किसी पर किसी का बन्धन नहीं, अतः कुंठा भी नहीं, विकृतियां भी नहीं। इस समाज-रचना का आधार है अन्तःपरिवर्तन। उस अन्तःपरिवर्तन की सम्पूर्णता तक पहुंचने के पूर्व आवश्यक है

संयम। यह संयम दमन नहीं है। दमनहीनतामूलक होता है, संयम करूणामूलक। दमन से कठोरता पैदा होती है, संयम से वत्सलता बढ़ती है। दमन से उत्ताप होता है, संयम से आनन्द।

फ्रॉयड के मतानुसार अचेतन मन इच्छाओं का केन्द्र है। लेकिन उसके उत्तराधिकारियों, जिनमें प्रमुख अल्फ्रेड एडलर तथा कार्ल गुस्तेव जुंग हैं, ने यह प्रमाणित कर दिया है कि अचेतन में इच्छाएं उठती हैं, दमित होने पर भी रहती हैं। मूलतः अचेतन मन मूल प्रवृत्तियों से निर्मित है। इसके मूल में संस्कार (आर्केटाइप्स) होते हैं और संस्कारों के मूल में स्मृति। स्मृति का उद्गम अनुभव है। अनुभव सद् और असद् किसी भी प्रकार के हो सकते हैं—दोनों प्रकार के भी, परस्पर विरोधी प्रकार के भी हो सकते हैं। अनुभव को ग्रहण करने की प्रक्रिया में पूर्वार्जित संस्कारों का योग होता है। अतः अनुभव और संस्कार परस्पर क्रिया-प्रतिक्रियाशील रहते हैं। अनुभव से संस्कार परिमार्जित हो सकते हैं और परिमार्जित संस्कारों की उपलब्ध अनुभव के प्रति ग्रहणशीलता और प्रतिक्रिया भी परिमार्जित एवं परिवर्तित होती है जिससे नये संस्कार बदलते जाते हैं।

मूल प्रवृत्तियों की आदिम अभिव्यक्ति भावना के स्तर पर होती है। भावनाएं अचेतन से चेतन में अनाबाध प्रवेश पाती हैं। अतः भावना को परिष्कृत करने की व्यवस्थित प्रक्रिया अतीव महत्वपूर्ण है।

जुंग की अवधारणा है कि अचेतन में सद्-असद् दोनों प्रकार के संस्कार और मूल प्रवृत्तियां होती हैं। अतः भावना के स्तर पर उनकी अभिव्यक्ति भी दोनों ही प्रकार की होगी। सद्भावनाओं को निरन्तर सबल बनाते रहने से असद् का प्रभाव कम होता जाता है। दमन नहीं होता, शमन होता है। प्रतिपक्ष सबल होता जाता है। तो असद् पक्ष स्वयं धूमिल होकर क्षीण हो जाता है। इसी को महावीर संयम कहते हैं जो दमन नहीं, शमन और क्षय है। जुंग एवं फ्रॉयड ने मनोविश्लेषण की जो प्रक्रिया बतायी है वही महावीर की भी प्रक्रिया है। बुद्ध और लाओत्से की प्रक्रिया भी वही है, क्योंकि जीवन के आधारभूत नियम तो सर्वत्र वही होते हैं।

फ्रॉयड ने कुण्डा-विमोचन की जो प्रक्रिया प्ररूपित की वह महावीर-प्रणीत प्रक्रिया से विपरीत नहीं अपितु उसी का प्रारम्भिक एवं सतही रूप है। महावीर उसे पीछे छोड़कर मन से अ-मन की गलत गहराइयों में उतरकर वहां तक पहुंच जाते हैं जहां कुण्डाओं का ही नहीं, उनके आधार-बिन्दु अहं का भी विमोचन हो जाता है।

कुण्डा-विमोचन के प्रकार

फ्रॉयड के मतानुसार कुण्डा-विमोचन का प्रथम सूत्र है— वर्जनाओं के प्रति आग्रह से चेतन मन की मुक्ति। वर्जनाएं वातावरण-सापेक्ष देश-कालानुरूप परिवर्तनशील होती हैं उनसे मुक्ति

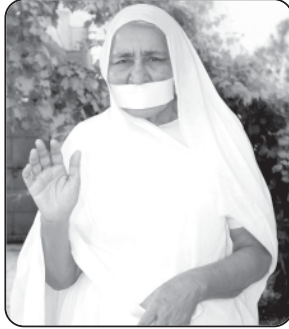
के लिए उनके इस स्वरूप का साक्षात्कार अपेक्षित है। महावीर की अनेकान्त दृष्टि वस्तु-जगत के हर पक्ष को उसके सही परिप्रेक्ष्य में देखने-समझने का आग्रह करती है। वह यहां कुण्डा-विमोचन में महत्वपूर्ण योगदायी हो सकती है।

दूसरा सूत्र है, बिना मताग्रह अथवा किसी प्रकार की भावात्मक प्रतिक्रिया के अपने हर भाव-विचार को देखते जाना। सुदूर बचपन तक स्मृति की डोर पकड़कर नीचे उतरते जाना और साक्षात्कार करते जाना हर घटना एवं उसके मनोगत प्रभाव का। महावीर की भाषा में यही प्रतिक्रमण है, बुद्ध की भाषा में सम्यक् स्मृति। फ्रॉयड ने इसके लिए सम्मोहन, किसी व्यक्ति के सामने अपने दमित मनोभावों का प्रकाशन कर भावमुक्त होने का मार्ग बताया है तथा सतत आत्मविश्लेषण का भी। महावीर की भाषा में प्रथम आत्मालोचन है, दूसरा है प्रतिक्रमण। बुद्ध और महावीर इस प्रक्रिया को लेकर चले तो जन्म-जन्मान्तरों तक चले गए। बुद्ध ने पांच सौ पचास जन्मों का साक्षात्कार कर इसे छोड़ा। महावीर संख्यातीत विस्तार तक जाकर अन्ततः लौट आए। क्योंकि उन्हें उसका न कहीं आदि मिला, न कहीं अन्त।

यह अन्तर्दृष्टि स्मृति की डोर पकड़कर अतीत में उतर जाती है तो प्रतिक्रमण बन जाती है तथा आत्मजागृति के रूप में वर्तमान के हर पल को सतत दृष्टि में रखने लगती है तो वह सामयिक सतत चित्त-जागरूकता या 'अवेयरनेस' है। फ्रॉयड ने भी इस पर बड़ा बल दिया, किन्तु उसकी दृष्टि तथा प्रक्रिया बहुत सतही है। जुंग उससे कुछ गहरा गया है। उसकी मान्यता है कि विस्मृति की परतें उतारते हुए हम हजारों लाखों वर्षों के अतीत में सतत जागरूकता सहित उतर सकते हैं। उसकी दिशा जुंग को भी अध्यात्म रूप में मिली। यही महावीर का साधना-पंथ है।

जुंग की धारणा है कि फ्रॉयड का लिविडो वास्तव में एक शक्ति-क्षेत्र है। उसकी अभिव्यक्ति किसी भी रूप में हो सकती है— अहंकार, वासना, मोह, क्रोध या स्वार्थ में। एडलर का कहना है कि मान-मन की ग्रन्थियां अहंकार से बनती हैं— हीनता या उच्चता के रूप में। हीनता-ग्रन्थि की एक विपरीत अभिव्यक्ति ही उच्चता-ग्रन्थि है। अतः इसके मिटने से मन स्वस्थ हो जाता है। फ्रॉयड की जिजीविषा, जुंग की आत्मशक्ति एक एडलर का अहंकार आवरण युक्त आत्मा की स्थितियां हैं और महावीर की भाषा में ये आवरण अज्ञानमूलक हैं, द्वैतमूलक हैं। महावीर आवरण-क्षय में विश्वास करते हुए स्वयं अपने में उसे साकार एवं सिद्ध भी कर दिखाते हैं। वह जो निर्ग्रन्थता का मार्ग है, मन, बुद्धि, ओर चेतन के स्तर का दिग्म्वरत्व-निरावणता है, सतत चेतन या 'जय' है, वही मन के समस्त रोगों का उपचार, आत्मविजय का सर्वस्वीकृत एवं स्वयंसिद्ध मार्ग है।

भारतीय नारी की विवशता



○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

कड़कड़ाती सर्दी का मौसम शुरू हो गया था। सुधाकर बाजार से लौटा तो रचना ने बाजार से आए घरेलू सामान के बिल उसके सामने रख दिए। बिल देखते ही सुधाकर खीज उठा। वह चीखते हुए-से बोला-“ये इतने बिल किसके हैं?”

किसके क्या हैं रचना ने कहा, अपने हैं। घर में जो आवश्यक सामान बाजार से आया है, उसके बिल हैं।

तब तक सुधाकर ने सभी बिलों के रूपये जोड़ लिए थे। कुल रूपये होते थे पाँच सौ पच्चीस।

उसकी जेब में तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी। फिर पाँच सौ पच्चीस कहाँ से लाए। वह जो भी कमाता था वो शराब और जुए में फूँक देता। फिर शराब-जुए की लत के कारण व्यापार भी चौपट होने लग गया था। इस हालत में वह बाजार का भुगतान करे भी कैसे?

पर सवाल यह भी था कि वह भुगतान न करे तो कौन करे। सामान घर में आया और घर के लिए आया। सुधाकर घर का खयाल न करके शराब-जुए में पैसा फूँक दे, रचना के लिए इससे अधिक पीड़ा और क्या हो सकती थी! फिर भी सुधाकर सम्हल कहाँ रहा था। उसने बिलों को एक ओर फेंकते हुए कहा-“मुझे कुछ पता नहीं इन बिलों का। तुम जानो और ये बिल जानें।”

रचना ने झल्लाते हुए कहा-“मैं क्या जानूँ इन बिलों को। घर में जो सामान आया है, उसी के बिल हैं। बाजार का पैसा आप नहीं चुकाएंगे तो और कौन चुकाएगा?”

सुधाकर थोड़ी देर चुप रहा। वह इस रोज-रोज की चक-चक से छुटकारा पाना चाहता था। उसने गुस्से से गुराँते हुए कहा-“तुम्हारे बिल तो रोजाना सामने रहते हैं। कभी दूध वाले का पैसा चुकाना है, कभी सब्जी वाले का चुकाना है, कभी यह बिल, कभी वह बिल। आगे से मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं। चाहे तू चुकाए, चाहे तेरा बाप चुकाए। मुझे इससे कोई मतलब नहीं।”

यह सुनते ही रचना विफर पड़ी। रोष ओर आवेश में उसने कहा- “खाने को मेरा बाप आया तो कर्ज भी वह चुका देगा। आपके बाप के पास रोटी नहीं थी तो बेटे की शादी ही क्यों रचाई। फिर जिसको हाथ पकड़कर लाए हो, उसके भरण-पोषण की जिम्मेवारी भी आपकी है। इसमें मेरे बाप के नाम को बीच में घसीटने की कोई जरूरत नहीं।”

सुधाकर गुस्से से तमतमा उठा। एक औरत की यह हिम्मत कि वह पति को डॉटने के लिए मुंह खोले। उसने उसके बालों को पकड़कर घसीटते हुए मकान से बाहर कर दिया। दरवाजा बन्द करते हुए वह बोला-“ले भोग अपने कर्मों को। इस घर में अब तेरे लिए कोई जगह नहीं।”

रचना को जिसकी कल्पना तक न थी, ऐसा हादसा उसके साथ हो गया। रात का समय। औरत की जात। सर्दी का मौसम। ओढ़ने-बिछाने को पास में कुछ नहीं। कहाँ जाए, क्या करे, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बेटी नेहा को उसने आवाज देकर बुलाना चाहा तो सुधाकर ने उसे भी डॉट कर कमरे में भेज दिया। सात वर्षीय बेटा विक्रम माँ की इस दुर्दशा को देखकर भीतर तक दहल गया था, किन्तु पापा के रौद्र-आतंक के सामने वह भी बिछौने में दुबक गया।

पड़ौसी के मकान के बरामदे में रचना ने आसरा लिया। टिटुरती सर्दी में रचना सुबक-सुबक कर अपने नसीब को कोस रही थी। पैसे माँगकर आखिर मैंने क्या कसूर किया, जिसकी यह सजा दी गई है। घर में क्या नहीं चाहिए। किन्तु जब भी कोई चीज माँगती हूँ, गालियाँ या मार-पीट ही मिलती है। शादी हुए आज अठारह साल हो रहे हैं। क्या सुख मिला है इस घर में। घरेलू सामान भी पीहर के रूपयों से लाती रही हूँ। जब भी पैसे माँगू कि झगड़ा, गाली-गलौज, मार-पीट तैयार। क्या इनको इसका पहले पता नहीं था कि परिवार बसाएँगे तो कमाना भी पड़ेगा। बिना कमाए घर का खर्च कैसे चलेगा।

फिर ये खुद घर-बच्चों को सम्हाल ले, तो मैं कहीं नौकरी-धंधे का जुगाड़ कर लूँ। पर यह भी कहाँ होता है। जबकि इंसान कुछ तो करे। कमाना किसी पर अहसान नहीं है। पशु-पक्षी भी इधर-उधर हाथ-पाँव मारकर अपना पेट भरते हैं। फिर हम तो मनुष्य हैं। इतनी-सी बात भी इनको समझ में क्यों नहीं आती। दुकान की ओर बिलकुल ध्यान नहीं। कमाना तो बिलकुल सुहाता ही नहीं, जबकि गंवाने के लिए हर समय पैसा चाहिए। कभी ताश-पती खेलना है, कभी बियर पीना है, कभी मित्रों के साथ सैर-सपाटे पर जाना है। कोई चिन्ता नहीं, बच्चों की स्कूल-फीस जमा हुई या नहीं, पढ़ने के लिए पुस्तकें आई या नहीं,

घर में दो जून रोटी का जुगाड़ भी है या नहीं, आराम-बीराम हालत में दवा के लिए पैसे कहाँ से आएंगे। जैसे कि इनकी कोई जिम्मेवारी ही नहीं। मैं आखिर सहन भी करूँ तो कब तक करूँ। इन्हीं व्यथा-कथाओं में डूबते-उतराते, कभी आँसू बहाते, कभी आक्रोश और खीज में होठों को भींचते-चवाते, रचना ने सारी रात गली के बरामदे में काटी।

सवेरा हो गया। फिर भी सुधाकर का मन नहीं पसीजा। वह आराम से अपने काम में लग गया। पड़ोसिन चाची ने सुधाकर को समझाने की कोशिश की तो उसे भी अपमानित करते हुए उसने घर से निकाल दिया। चाची रचना के पास आई और बोली-“बेटी उठ, जाकर पति के पाँव पकड़कर माफी माँग ले। औरत का तो जन्म ही झुकने-सहने के लिए हुआ है।”

रचना ने फुफकारते हुए कहा-“चाचीजी, माफी? किस गलती की माफी माँगूँ, जरा बताएँ तो सही। गलती करें ये ओर माफी माँगूँ मैं, पाँव पकड़ूँ मैं, यह कहाँ का न्याय है? आज तक मैं ऐसा करती रही, तभी इनका अहंकार सातवें आसमान पर पहुँच गया है। हर कोई दबने वाले को ही दबाता है। मैं इस बार नहीं दबने वाली, नहीं झुकने वाली। आखिर एक पुरुष को क्या हक है कि वह अपनी बेकसूर पत्नी को टिटुरती रात में घर से बाहर कर दे। किसने यह हक दिया पुरुष को। मैंने आज तक बहुत सहा है। इसी कारण इनका अहंकार भी बढ़ता रहा है। अब मेरे से सहन नहीं होने का। माफी माँगने का सवाल ही नहीं उठता।

चाची रचना के दर्द को पहचान रही थी। पर वह स्त्री की सीमाओं को भी समझ रही थी। उसने प्यार से समझाते हुए कहा-“नेहा की मम्मी, हम भारतीय नारी हैं। चाहे गलती पुरुष की ही हो, झुकना हमें ही पड़ेगा। सुधाकर ने साफ कह दिया है, रचना चाहे किसी घर में जाए या भाड़ में, इस घर में मैं पाँव नहीं रखने दूँगा।”

“और फिर भी आप उस घर में जाने के लिए कह रही हैं, रचना ने चाची की बात बीच में ही काटते हुए कहा। मैं नहीं रखूँगी उस घर में पाँव, जहाँ मुझे अपमान और ताड़ना के सिवा कुछ नहीं मिलता? मैं गुलाम बनकर नहीं रह सकती। अपने पीहर के पैसों से घर-खर्च भी मैं चलाऊँ और कदम-कदम पर अपमान भी सहूँ, यह नहीं होने का मेरे से।”

जरा टण्डे दिमाग से सोचो नेहा की मम्मी, चाची ने कहा। अपने घर में नहीं जाओगी तो कहाँ जाओगी। क्या इसी खुले बरामदे में जीवन काटोगी? या फिर अपने पीहर जाओगी? पीहर में अब माता-पिता कितने दिनों के हैं। भाई-भाभी कब तक निभाएँगे। सब तरह से

आगे-पीछे की सोचकर आदमी को निर्णय लेना चाहिए। फिर तुम किसी दूसरे के घर तो जा नहीं रही हो। जितना अधिकार इस घर पर उनका है, उतना तुम्हारा है। चल ऊपर मेरे साथ, मैं समझौता करा देती हूँ।

सब ओर से विवश रचना पड़ोसिन चाची का सहारा लिए लड़खड़ाती हुई ऊपर आ जाती है। पति के तेवर जैसे ही चढ़े हुए हैं। नेहा और विक्रम-दोनों बच्चे स्कूल जा चुके हैं। रचना मुंह फुलाए एक ओर बैठ गई। सुधाकर मुंह फुलाए ड्राइंगरूम में चला गया। बेचारी चाची परेशान, करे तो क्या करे। दोनों को यों ही छोड़कर जाने का अर्थ था फिर से महाभारत शुरू होना। उसने सोचा-झगड़े का मूल कारण है घर-खर्च के लिए पैसे की माँग, क्यों न इस मूल को ही समूल खतम किया जाए। उसने रचना को धीमे से समझाते हुए कहा-“देख, नेहा की मम्मी, घर-खर्च को ही लेकर सारा झगड़ा है। जब तक उनकी गलत आदतें नहीं छूटेंगी, तब तक ये घर खर्च के लिए कुछ दे सकें, ऐसा लगता नहीं। इस स्थिति में घर-खर्च तो तुम्हें ही चलाना पड़ेगा। इस बात पर अगर तुम सहमत होती हो, तो समझौता हो सकता है। एक बार घर का वातावरण प्रेममय हो जाए, तो तुम इनकी गलत आदतें भी प्रेम से छुड़ा सकती हो। इस तनाव भरे वातावरण में तो कुछ भी सम्भव नहीं लगता।

सब तरह से परेशान रचना ने चाची का समझौता-प्रस्ताव मान लिया कि वह घर-खर्च के लिए सुधाकर से कभी पैसे नहीं माँगेगी। सुधाकर को इस समझौते पर सहमत होना ही था। उसका तो सदा का सिरदर्द ही मिट गया था।

रचना के लिए यह समझौता एक विवशता थी। इससे उसे कहीं भी खुशी नहीं थी। वह भीतर-ही-भीतर आग से जली जा रही थी। वाह रे मेरे समाज, सारी मजबूरियाँ औरत के सिर पर मढ़ दी गईं। वह नौकरी करे तो कुल की इज्जत जाती है। पति से घर-खर्च माँगे तो मार पड़ती है। पीहर से पैसा मँगवाए तो क्यों ओर कब तक सम्भव है। और वह भी कोई इज्जत की बात नहीं। इन सबके अलावा पति को सिगरेट, शराब और जुए के लिए वही अपना धन दे, आभूषण दे, नहीं तो वही अपमान, प्रताड़ना, वही मार-पीट। क्या पुरुष की मनमानी सदा ऐसे ही चलती रहेगी, क्या बेगुनाह, औरतें पुरुषों के झूठे अहंकार के नीचे दबकर यों ही पिसती रहेंगी? अचानक उसकी कातर आँखों से दो आँसू ढलक पड़ते हैं। वह साड़ी के पल्लू से आँसूओं को पोंछती हुई घर के काम में लग जाती है।

जीवन की पगडण्डी, कांटो से गुजरती है
वीरों की झोली ही, फूलों से भरती है।।

जिसको मरना आया, उसको जीना आया
विष घूंट पिया जिसने, उसने अमृत पाया
वह नहीं जिंदगी जो सौ सौ दफा मरती है। (1)

पथ पर जो कदम बढ़ा, वो रूकने ना पाए
मंजूर टूटना हो, वो झुकने ना पाए
बढ़ने वालों का ही मंजिल स्वागत करती है। (2)

जिसको परवाह नहीं, कांटो तूफानों की
कोई भी चाह नहीं, पद यश सम्मानों की,
जग के नक्शे पर वो तस्वीर उभरती है। (3)

आती जो विपदाएं, वे रूप कसौटी हैं,
आदर्श भरी बातें सच्ची या खोटी हैं
कायर पर प्रभु की भी करुणा न उतरती है। (4)



एक बार एक बुढ़िया मां के घर एक ज्योतिषी का आगमन हुआ। बुढ़िया मां ने ज्योतिषी का आदर सत्कार किया। भोजन करवाया। तत्पश्चात् हर मां की तरह उसने भी अपने पुत्र की जन्म पत्रिका ज्योतिषी के सम्मुख रखी। ज्योतिषी ने जन्म पत्रिका को देखते हुए कहा-माता तुम्हारे पुत्र का भाग्य बड़ा प्रबल है। इसके ग्रह बोल रहे हैं कि यह महान सम्राट के पद को सुशोभित करेगा। माता तुम राजमाता बनोगी। अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो तो अपने पुत्र के आगे वाले दांत पर अंकित नागदेवता के चित्र को देख लेना। यह चिन्ह इसे अवश्य ही चक्रवर्ती सम्राट बनाएगा।

ज्योतिषी तो भविष्यवाणी करके चला गया लेकिन पुत्र का भविष्य जानकर माता उदास हो गयी इतने में पुत्र घर पर आ गया। माता को उदास देखकर पुत्र ने पूछा-माता! क्या आप अस्वस्थ हैं या मुझसे कोई भूल हो गयी है। आखिर आपकी उदासी का क्या कारण है? मैं जानना चाहता हूँ।

मां ने गहरा सांस लेते हुए कहा- पुत्र मेरी उदासी का कारण तुम ही हो। आज अपने घर एक ज्योतिषी आया था। मैंने उससे तुम्हारे भविष्य के बारे में पूछा तो उसने बताया कि तुम्हारा पुत्र सम्राट बनेगा। माता! पहली बात तो यह है कि इन ज्योतिषियों की भविष्यवाणी का कोई सशक्त आधार नहीं होता दूसरी बात यह है कि अगर मैं सम्राट बनूंगा तो आप राजमाता बनेंगी फिर इसमें उदासी का क्या कारण है?

मां ने फिर कहना आरम्भ किया कि पुत्र! ज्योतिषी की भविष्यवाणी का आधार है तुम्हारे दाँत पर अंकित नाग देवता का चिन्ह कहते हैं कि जिस के आगे वाले दाँत बड़े हो और दो दाँतों के बीच जगह खाली हो और उस दाँत पर नागदेवता का चिन्ह हो वह निश्चित रूप से चक्रवर्ती सम्राट बनता है। रही मेरी उदासी का कारण सो पुत्र! जब तुम चक्रवर्ती सम्राट बन जाओगे तो तुम्हारा कार्य क्षेत्र बहुत बढ़ जायेगा। फिर माता के पुत्र नहीं प्रजा के सेवक बन जाओगे फिर मैं तो तुम्हारे मुँह से माता शब्द सुनने के लिए भी तरस जाऊँगी। तुम्हें कहां समय मिलेगा माँ के पास बैठने का। बस यही मेरी उदासी का कारण है।

पुत्र माता की बात पर हंसता हुआ घर के पिछवाड़े गया एक पत्थर उठाया और उससे अपने आगे वाले दोनों दाँत तोड़ दिये। खून की धारा बहने लगी। मां के पास आया और अपने दोनों टूटे हुए दाँत मां के चरणों में रखता हुआ बोला मां! मैंने सम्राट बनने के कारण को ही खत्म कर दिया है तुम खुश हो जाओ! मैं आपकी उदासी नहीं देख सकता।

मां पुत्र की ओर देखती रह गयी। पुत्र मां के सामने हाथ जोड़े मुस्कुरा रहा था। मातृभक्त पुत्र और कोई नहीं चन्द्रगुप्त का महामंत्री चाणक्य था जो दाँत तोड़ने से सम्राट तो नहीं बन सका पर महामंत्री अवश्य बन गया।

अनोखी पुराण कथाएं

○ सं. अम्बिका उपाध्याय

एक बार देवताओं ने यज्ञ करने का निश्चय किया। यज्ञ के लिए अग्नि को होता अर्थात् पुरोहित नियुक्त किया गया। लेकिन अग्नि होता नहीं बनना चाहते थे। वे भाग गए। तब दूसरे अग्नि को होता पद के लिए चुना गया। लेकिन वह भी भाग खड़े हुए। इसी तरह तीसरे अग्नि का चयन किया गया। वह भागकर जल में छिप गए। देवताओं ने उन्हें खोज लिया और बलपूर्वक उन्हें वहां से निकाल लाए। अग्नि को जल पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने जल से कहा-तुम रक्षा का स्थान नहीं हो। मैंने तुम्हारी शरण ली थी कि तुम मुझे छिपा लोगे। किन्तु तुमसे आवृत होने पर भी देवता मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध खोज लाए। यह कहकर अग्नि ने जल पर थूक दिया।

तब उस जल में से आप्य देव निकले। उनके नाम थे- त्रित, छित, और एकत। ये आप्य देव इन्द्र के सहायक बनकर उनके साथ रहने लगे। इन्द्र ने जब तीन सिरों वाले विश्वरूप त्वाष्ट्र को मारने का निश्चय किया तो आप्य देवों को भी इस बात का पता चल गया। इस पर त्रित ने पहले ही विश्वरूप को मार डाला और इन्द्र को हत्या के पाप से बचा लिया।

कुछ लोगों ने कहा- चूंकि इन्द्र विश्वरूप को मारने का निश्चय कर चुके थे, अतः हत्या का पाप उन्हें भी लगेगा। पर अन्य लोगों का मत था कि हत्या का पाप केवल त्रित का नहीं बल्कि तीनों आप्य देवों का है क्योंकि उन तीनों का पता था कि वध होगा। अन्त में यही निर्णय हुआ कि हत्या का पाप तीनों आप्य देवों का है क्योंकि उन तीनों का पता था कि वध होगा। अन्त में यही निर्णय हुआ कि हत्या का पाप तीनों आप्य देवों को लगेगा। लोगों ने पूछा- 'कैसे?'

तो बताया गया कि यज्ञ उन पर यह पाप लगा देगा। इस तरह विश्वरूप को मारने का पाप आप्यों को लगा। आप्यों ने कहा- 'हम इस पाप को आगे बढ़ा देंगे।' लोगों ने पूछा- 'किस तक?' 'आप्य बोले- 'उन लोगों तक जो बिना दक्षिणा दिए यज्ञ करते हैं।'

तब से यज्ञ में दक्षिणा देने की प्रथा चल पड़ी। क्योंकि ऐसी मान्यता है कि यज्ञ उस पाप को आप्यों तक पहुंचा देता है और आप्य उस पाप को बिना दक्षिणा दिए यज्ञ करने वालों तक पहुंचा देते हैं।

ऋतुएं

एक बार देव यज्ञ कर रहे थे। ऋतुओं ने भी यज्ञ में भाग मांगा। किन्तु देवों ने ऋतुओं को यज्ञ में भाग देने से इन्कार कर दिया। इस पर ऋतुएं नाराज होकर असुरों के पास चली गईं।

देवों और असुरों में बराबर अनवन रहती ही थी। असुर देवों के शत्रु थे। उनका अहित चाहते थे। ऋतुओं के आने से बड़े प्रसन्न हुए। ऋतुओं के आने से उनकी बड़ी उन्नति हुई। जो कुछ वे जोतते-बोते वह इतनी जल्दी फूलता-फलता कि आगे-आगे कुछ असुर फसल बोते जाते और पीछे-पीछे कुछ असुर उसी फसल को काटते जाते। फसलों के अंकुरित होने, बढ़ने और पकने में बिल्कुल समय नहीं लगता था। ऐसा प्रतीत होता मानों बिना जोते-बोए ही फसलें पक जाती हैं।

देवों को बड़ी चिन्ता हुई कि इस प्रकार शत्रु-शत्रु को हानि पहुंचाए वह तो साधारण बात है लेकिन अपने मित्र शत्रुओं की मदद करें और अपनों को हानि पहुंचाए, यह तो बहुत बुरी बात है। इसका कुछ उपाय करना ही होगा। यह सोचकर उन्होंने तय किया कि पहले ऋतुओं को वापस बुलाना होगा। मगर यह कैसे हो? ऋतुएं यज्ञ में भाग न मिलने से रूठकर चली गई थीं, अतः उन्हें यज्ञ में भाग देने का निर्णय किया गया।

यज्ञ में सबसे पहले अग्नि को आहुति दी जाती थी अग्नि को भय हुआ कि उनके स्थान पर ऋतुओं को आहुति दी जाएगी। वे बोले- 'तुम पहले मुझे आहुति देते आए हो। अब मैं कहां जाऊं?'

देवताओं ने कहा- 'आपका स्थान वहीं रहेगा। हम आपको आपके स्थान से च्युत नहीं करेंगे।'

स्थान से च्युत न किए जाने के कारण अग्नि का नाम 'अच्युत' पड़ा। अच्युत अर्थात् वह व्यक्ति जो अपने स्थान से हटाया नहीं जाता।

देवों ने अग्नि से प्रार्थना की कि वे ऋतुओं का वापस बुला लाए। अग्नि ने जाकर ऋतुओं से कहा- 'चलो, लौट चलें। मैंने तुम्हारे लिए देवताओं के यज्ञ में स्थान दिलवा दिया है।'

ऋतुओं ने कहा- 'कौन सा स्थान?'

अग्नि ने कहा- 'वे पहले तुम्हारे लिए आहुति देंगे।'

तब ऋतुएं बोलीं- 'आपने हमें यज्ञ में भाग दिलवाया है, हम आपको अपने साथ यज्ञ में भाग देंगे।'

तब से यज्ञ में ऋतुओं के लिए आहुति देते समय अग्नि का भी नाम साथ ही लिया जाता है। ठीक भी है, क्योंकि ऋतुओं का विशेष काम तो फसलों को पकाना है और फसलों को पकाने में अग्नि के ताप की आवश्यकता होती है।

गजल



अकीदतों ने जहां भी सजा लिये पत्थर
वकारे-का बा-ओ-काशी बना लिये पत्थर

वो चाहता है मुझे कत्ल करना किस्तों में
फिर उसने कल के लिये कुछ बचा लिये पत्थर

लगी जो प्यास तो खूने-जिगर को चूस लिया
जो भूख जागी तो उसने चबा लिये पत्थर

करे भी कौन यहाँ पैरवी गुलावों की
दिल-ओ-दिमाग तो सब ने बना लिये पत्थर

न जाने कैसी हवायें चली हैं गुलशन में
सभी ने हाथों में अपने उठा लिये पत्थर

-सखाल सन्ना, बरेली

रहस्य-रोमांच

फाँसी के बाद भी 62 साल जीवित रहा वह

विल पर्विस को फाँसी की टिकटी के पास ले जाकर खड़ा किया गया। उसके हाथ पीछे बंधे हुए थे और पैरों के नीचे वह तख्ता था जिसे हटा कर उसके शरीर को टिकटी पर लटका दिया जाना था। वह जानता था कि कुछ ही क्षणों में उसकी मृत्यु होने वाली है। जल्लाद ने फाँसी का फंदा उसके गले में डाला। फिर उसके पैरों के नीचे से तख्ता खींच लिया गया। उसके वजन से रस्सी तन गई और क्षणभर पर्विस हवा में झूलता रहा, फिर नीचे गिर पड़ा। परन्तु यह क्या! कुछ ही क्षण बाद लोगों का शोर एकदम शांत हो गया क्योंकि उन्होंने देखा कि विल पर्विस मरा नहीं, बल्कि जीवित है। इस चमत्कार से वे स्तब्ध रह गये।

1893 में विल पर्विस को लम्बर्टन के फाँसी घर में फाँसी लगाई गई थी। संयोगवश फाँसी लगने के बाद भी वह जीवित बच गया। इस चमत्कार से प्राणदंड देने वालों ने यह समझा कि वह दण्ड का भागी नहीं है अतः उसे मृत्यु-दंड नहीं देना चाहिए।

यह घटना मिसौरी के लम्बर्टन नामक स्थान की है। मिसौरी के उस समय न्याय करने में अधिक समय नहीं लगता था। सफेद टोप वाले नगर-रक्षकों को 'व्हाइट कैप' कहा जाता था जो पशु-चोरों, अपराधियों तथा हत्यारों को गिरफ्तार करते थे और बहुत जल्दी ही फैसला सुना देते थे। यह फैसला प्रायः प्राणदण्ड होता था। विल पर्विस स्वयं ही एक 'व्हाइट कैप' नगर-रक्षक था।

घटना यों है कि एक बार लम्बर्टन के एक किसान से पर्विस की कुछ कहा-सुनी हो गयी और नौबत हाथापाई तक पहुंच गई। मित्रों ने प्रयत्न किया कि बीच-बचाव हो जाए और दोनों में पुनः मैत्री हो जाए। परन्तु पर्विस ने किसान को चेतावनी दी कि "शीघ्र ही किसी दिन मैं तुझसे निपटुंगा।"

पर्विस ने यह बात सबके सामने कही थी और उसे जब भी अवसर मिलता रहा तब वह अपनी धमकी को दोहराता रहा। परन्तु अधिकांश लोगों ने उसी इस धमकी पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझी क्योंकि पर्विस के विषय यह प्रसिद्ध था कि उसे क्रोध भी जल्दी आता है और शांत भी जल्दी हो जाता है।

परंतु हुआ यह कि शीघ्र ही एक दिन वह किसान एक झाड़ी में मरा हुआ पाया गया। लोगों ने उधर से हत्यारे को सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए जाते देखा था और वह 'व्हाइट कैप' रक्षकों की वर्दी पहने था। सभी लोगों को तथा अन्य 'व्हाइट कैप' रक्षकों को यह विश्वास हो गया कि यह हत्या पर्विस ने ही की है। उन लोगों के दिमाग में पर्विस को वे सब धमकियां घूम गईं जो उसने उस किसान को दी थी।

इसके अतिरिक्त एक और पक्का सबूत पर्विस के विरुद्ध मिल गया। वहां के बहुत से लोगों ने कसम खाकर कहा कि जब किसान की हत्या की खबर फैली उसी समय उन्होंने पर्विस को रक्षकों की वर्दी पहने हुए घोड़े पर सवार नगर में आते देखा था।

इतने प्रमाण मिल जाने के कारण पर्विस को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार करने वाले उसी के साथी नगर रक्षक थे। न्यायालय ने मामले की सुनवाई की। उन्होंने पर्विस के आरोप को बड़े गंभीर रूप में देखा, क्योंकि उसने नगर-रक्षक होते हुए हत्या की थी।

विल पर्विस ने लाख कसमें खायीं कि मैंने हत्या नहीं की है, परंतु उसकी किसी ने नहीं सुनी, क्योंकि हत्या से पहले के तथा हत्या के बाद के समस्त प्रमाण उसके विरुद्ध थे। अतः यही फैसला हुआ कि पर्विस ने हत्या की है और उसे फांसी दी जाए।

जिस दिन फांसी लगनी थी उस दिन चारों ओर से लोगों की भीड़ फांसीघर की ओर उमड़ पड़ी। उनमें बहुत से प्रसिद्ध अपराधी और हत्यारे भी थे। वे पर्विस की फांसी का दृश्य देखने को उत्सुक थे क्योंकि उसने बहुत से अपराधियों को गिरफ्तार कर प्राणदंड दिया था। लम्बर्टन कके सामान्य नागरिक भी पर्विस पर बहुत खफा थे क्योंकि उसने नगर-रक्षक रहते हुए भी ऐसा जघन्य अपराध किया था।

विल पर्विस को फांसी की टिकटी के पास ले जाकर खड़ा किया गया। उसके हाथ पीछे बंधे हुए थे और पैरों के नीचे वह तख्ता था जिसे हटा कर उसके शरीर को टिकटी पर लटक दिया जाना था वह जानता था कि कुछ ही क्षणों में उसकी मृत्यु होने वाली है।

जल्लाद ने फांसी का फंदा उसके गले में डाला। फिर उसके पैरों के नीचे से तख्ता खींच लिया गया। उसके वजन से रस्सी तन गई और क्षणभर पर्विस हवा में झूलता रहा फिर नीचे गिर पड़ा। परन्तु यह क्या! कुछ ही क्षण बाद लोगों का शोर एकदम शांत हो गया क्योंकि उन्होंने देखा कि विल पर्विस मरा नहीं, बल्कि जीवित है। उस चमत्कार से वे स्तब्ध रह गये।

वास्तव में फांसी का फंदा उसके गले में कसने की बजाय सरक कर निकल गया था और टिकटी के नीचे जमीन पर विल पर्विस हक्का-बक्का पड़ा था। दर्शक तो आश्चर्यचकित थे ही, पर्विस उनको और भी आश्चर्य से देख रहा था।

फांसी लगने के बाद भी विल पर्विस के जीवित बच जानेसे सब लोग इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इसे एक दैवी संकेत समझा और मांग की कि पर्विस की छोड़ देना चाहिए। जो अब तक पर्विस को फांसी पर लटकाने की जोर-शोर मचाना शुरू किया कि पर्विस को मुक्त करो। नगर-रक्षक भी उसे मुक्त करने को उत्सुक हो गये थे। अतः वह मुक्त कर दिया गया।

लेकिन इस घटना का यही अंत नहीं होता। 18 वर्ष बाद पता चला कि पर्विस वास्तव में हत्या नहीं था। फांसी की घटना के 18 वर्ष बाद एक अन्य 'व्हाइट कैप' नगर-रक्षक ने अपनी मृत्यु शय्या पर हत्या उसने की थी। 'विल पर्विस यदि उस दिन मर जाता तो अन्याय हो जाता' इसे दैवीय संकेत समझ कर लोग आज भी इस घटना को याद करते हैं।

प्रस्तुति : विश्वामित्र से साभार

गजल

पेड़ के सूखे तने पर कोंपलों की बात हो,
इस बयावों में कहीं तो होंसलों की बात हो।
वो समंदर ढल रहा है बर्फ के आकार में,
हे मुनासिब ववत अब तो हमचलों की बात हो।
इस जमीनो-आसमाँ पर एक हमारा है नहीं,
ऐसा जो बतला रही उन फाइलों की बात हो।
धीरे-धीरे बढ़ रही हैं चादरें उनकी यहाँ,
छीनते हैं टाट जो उन मखमलों की बात हो।
मूँदने से आँख को हालत बदलती है कहँ,
मुँह बाये जो खड़ी उन मुश्किलों की बात हो।

-आशीष दशोत्तर, सतलाम

गैस की दिक्कत को यूं करें गायब

पेट में गैस न सिर्फ खुद एक बीमारी है, बल्कि दूसरी कई बीमारियों की जड़ भी है। कई बार यह दूसरों के सामने हास्यास्पद या अजीब स्थिति में लाकर भी खड़ा कर देती है। लेकिन थोड़ी-सी सावधानी से इस दिक्कत से काफी हद तक बचा जा सकता है। एक्सपर्ट्स की सलाह से गैस से छुटकारे के उपाय बता रहे हैं।

गैस यानी बीमारियों की जड़

पेट गैस को अधोवायु बोलते हैं। यह पेट में बनी रहे तो कई बीमारियां हो सकती हैं, जैसे एसिडिटी, कब्ज, पेटदर्द, सिरदर्द, जी मिचलाना, बेचैनी आदि। लंबे समय तक गैस को रोके रखने से बवासीर भी हो सकती है।

गैस है, कैसे पहचानें

पेट में दर्द, जलन, पेट से गैस पास होना, डकारें आना, छाती में जलन, अफारा। इसके अलावा, जी मिचलाना, खाना खाने के बाद पेट ज्यादा भारी लगना और खाना हजम न होना, भूख कम लगना, पेट भारी-भारी रहना और पेट साफ न होने जैसा महसूस होना।

किससे बनती है गैस

गलत खानपान

- शराब पीने से।
- मिर्च-मसाला, तली-भुनी चीजें ज्यादा खाने से।
- राजमा, छोले, लोबिया, मोठ, उड़द की दाल, फास्ट फूड, ब्रेड और किसी-किसी को दूध या भूख से ज्यादा खाने से।
- खाने के साथ कोल्ड ड्रिंक लेने से।
- तला या बासी खाना लेने से।

गलत लाइफस्टाइल

- टेंशन रखने से
- देर से सोने और सुबह देर से जागने से।
- खाने-पीने का टाइम फिक्सड न होने से।

बाकी वजहें

- लिवर में सूजन, गॉल ब्लैडर में स्टोन, अल्सर या मोटापे से

- डायबीटीज, अस्थमा या बच्चों के पेट में कीड़ों की वजह से।
- अक्सर पेनकिलर खाने से।
- कब्ज, अतिसार, खाना न पचने व उलटी की वजह से।

जॉंच के 3 तरीके

- एंडोस्कोपी, ब्लड टेस्ट और बैक्टीरिया टेस्ट

क्या है इलाज

आयुर्वेद

नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा अजमा सकते हैं-

- गैसांतक वटी। शुरू में दो गोली दिन में तीन बार गर्म पानी से खाने के बाद लें, पर कुछ दिन बाद एक-एक गोली तीन बार कर दें और धीरे-धीरे एक गोली एक बार।
- हिमालय की लिव-52, दो गोली हर बार खाने के बाद लें।
- लहशुनादि वटी एक-एक गोली तीन बार लें।
- एमिल की एमिली क्योर कैप्सूल, सुबह-शाम खाने के बाद लें।
- चित्रकादि वटी, एक-एक सुबह-शाम लें।
- अविपत्तिकर चूर्ण, खाना खाने के आधे घंटे बाद दो से छह ग्राम लें।
- हिंवाष्टक, लवणभास्कर चूर्ण या अजमादादि चूर्ण में से कोई एक लें।

योग

आसन- मन्डुकासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, धनुरासन, वक्रासन आदि।

प्राणायाम- कपालभाति, अग्निसार आदि।

इसके अतिरिक्त आप कुन्जल एवं शंखप्रच्छालन का भी प्रयोग कर सकते हैं।

होम्योपैथिक

नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा की पांच-पांच गोलियां दिन में तीन बार लें।

- गैस ऊपर की ओर जोर मारे और डकारें आए तो कार्बोवेज-30 (Carboveg) लें
- गैस पास हो रही हो, तो लाइकोपोडियम-30 (Lycopodium) लें।
- गैस पेट में घूम रही हो साथ ही पास भी हो रही हो और डकारें भी आ रही हों, या फिर गैस रुक जाए, पेट फूल जाए और अफारा भी हो तो सिंकोना ऑफ या चाइना-30 (Cinchona off या China-30) लें।
- ऐसे लोग, जिन्हें घबराहट के साथ जोर-जोर से डकारें आती हों, अर्जेंटम नाइट्रिकम (Argentum Nitricum) लें।

प्रस्तुति : अरुण तिवारी

हमारे भीतर है ईश्वर

किसी भी पदार्थ या वस्तु को हासिल करने के लिए सामान्य नियम यह है कि वह जहां है, वहीं से प्राप्त होगी। उसे उस स्थान के अलावा कहीं और से हासिल नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर सोने के आभूषण सुनार के यहां मिलेंगे, अनाज के गोदाम से नहीं। इसी तरह कपड़े के व्यवसायी के यहां वस्त्र मिलेंगे, साग-सब्जी नहीं। इसी तरह प्रकृति का सिद्धांत है कि आम के वृक्ष से आम मिलेंगे, लीची नहीं। लीची तो लीची के पेड़ से ही प्राप्त हो सकती हैं।

दूसरी बात यह है कि जो चीज प्रत्यक्ष है, हमारे सामने मौजूद है, उसे ढूंढने की क्या जरूरत? ढूंढी जाती है वो चीज, जो गुम हो गई हो। परमात्मा को ढूंढने की भला क्या जरूरत? क्या वह खो गया है? वह तो हर पल हर सांस में हमारे साथ मौजूद है। हाजिर में हुज्जत और गैर की तलाश अर्थात् जो हाजिर है, हम उसे नकार रहे हैं, और बाहर कहां-कहां ढूंढ रहे हैं?

महात्माओं ने यही बात कही है कि जो चीज पहले से ही हमारे अंदर मौजूद है, प्राप्त है, उसी को तो पाना है। यह कैसी विडंबना है कि हम उस 'प्राप्त' चीज को बिसरा कर उसे बाहर ढूंढ रहे हैं। जो चीज हमारे भीतर नहीं है, वह आ नहीं सकती और इसी प्रकार जो चीज हमारे पास है, वह भला कहीं और कैसे जा सकती है? हमें उस चीज की उपस्थिति का ज्ञान सिर्फ इसलिए नहीं होता, क्योंकि वह अभी तक आवृत है। उस पर हमारी अज्ञानता का आवरण पड़ा हुआ है।

किसी जानकार व्यक्ति से यह पूछते हैं कि ईश्वर कहां मिलेगा? परमानंद कहां मिलेगा? पता संभवतः हमें मालूम हो, क्योंकि हमने हर जगह यह पढ़ा और सुना है कि वह हमारे हृदय में रहता है, परंतु हृदय में उसे कैसे खोजा जाए? हमें गलियां और मोहल्ले तो मालूम नहीं हैं। कोई साधु, कोई गुरु, कोई ज्ञानी है नजर में जो बता दे कि हृदय में स्थित ईश्वर तक कैसे पहुंचा जाए? आसपास कोई ऐसा ज्ञानी जन हो भी तो उसे पहचानें कैसे? साधु मिल भी जाए तो पूछें कैसे? संकोच होता है। इसीलिए ईश्वर की खोज में दर-दर भटकते रहते हैं। परमात्मा का निवास हमारे हृदय में है और हम उसे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च और तीर्थ स्थानों में खोज रहे हैं।

प्रस्तुति : ज्योति कानुगा (गरिमा)

हंसी से जानें अपना स्वभाव

हंसकर यूं तो मनुष्य अपनी प्रसन्नता ही व्यक्त करता है, किंतु हास्य की विभिन्न शैलियों के माध्यम से अपना व्यक्तित्व व स्वभाव भी जान सकते हैं, तो आइए जानें आपकी हंसी के अनुरूप कैसा है आपका स्वभाव :-

खिल-खिलाकर हंसना

लड़कियां प्रायः खिल-खिलाकर हंसती हैं। जिनमें एक प्रमुख दोष यह होता है कि यह कही हुई बातों को गंभीरता से नहीं लेती हैं। यदि कोई स्त्री बहुत ही जोर-जोर से खिलखिलाती हो तो इस दौरान उसकी देह भी कंपित होती हो, तो यह उसे चरित्र की दृष्टि से शुभ संकेत नहीं है।

मुस्कुराहट

सौम्य स्थिति स्त्री के लिए हास्य की सबसे शिष्ट एवं शालीन शैली है। ऐसी स्त्रियां मर्यादा को मानने वाली व लज्जाशील होती हैं। आमतौर पर मुस्कुराहट के द्वारा अपना हास्य प्रकट करने वाले लोग गंभीर, विश्वसनीय व सुरुचि संपन्न होते हैं। मुस्कुराहट के दौरान दांत दिखाने वाले लोग बुद्धिमान, कर्मशील व समायोजन-क्षमता संपन्न होते हैं, लेकिन वे रहस्य को गुप्त नहीं रख पाते। इसके विपरीत बंद होठों में मुस्कुराने वाले लोगों में गोपन की प्रवृत्ति हावी रहती है।

- बिना हंसे भी जिनके मुख पर सर्वदा एक निर्मल स्थिति तैरती रहती हो, वे लोग सुखी व सौभाग्यशाली होते हैं।
- व्यंग्यपूर्ण, कुटिल व कृत्रिम मुस्कान अलग से पहचान में आती है जो धारक के मन में समाई दुष्ट-भावना को प्रकट करती है।
- हंसते समय गालों पर गड़ढे पड़ना स्वभाव की प्रणय प्रियता का संकेत है।
- कंधे, सिर, ग्रीवा आदि फड़काते हुए हंसना कामुकता की पहचान है।



-साध्वी वसुमती

मासिक राशि भविष्यफल-दिसम्बर 2009

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफल दायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टि दायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्वाण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी। मित्र मददगार होंगे। कुछ यात्राएं भी लाभप्रद हो सकती हैं।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला है कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। मित्रों से लाभ-होगा। किसी दूसरे के झंझट में न पड़े, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा जाही लगी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभलाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएँ पूरी होने की खुशी होगी। इस राशि के जातक अन्य के झगड़ों से दूर रहें।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रम साध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है। घर परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फल दायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं को अंजमा को देंगे।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आदि तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। जैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों को लंबित पेड़ भूमि भवन के फ़ैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवार जनों में आपकी साख बनी रहेगी।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा किन्तु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता आता पैसा रूक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेगी। कि मानसिक चिंता बनेगी।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़े। इन जातकों के भूमि भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी किन्तु कोई हल निकल आएगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेषतया सचेत रहें। शत्रु सिर उठायेगे किन्तु उनकी कुचालें विफल हो जाएंगी।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्य तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

भीन-भीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमेआदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं। नौकरी पेशा जातकों का अपने अधिकारियों के प्रति रवैया अपतितजनक हो सकता है जिसके कारण टकराव की स्थिति आ सकती है।

-इतिशुभम्

भीतर के पशुओं पर विजय पाएं

न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में श्री मनोहर जी अग्रवाल के आवास पर आयोजित सत्संग में पूज्य आचार्यजी ने कहा-धर्म आराधना का उद्देश्य मनो-कामनाओं की पूर्ति नहीं, किन्तु मन और इन्द्रिय-जय होना चाहिए। हमें मनुष्य का जीवन अवश्य मिला है। लेकिन यह भी समझना जरूरी है हमारे भीतर अनेक जानवर भी विद्यमान हैं। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ की वृत्तियाँ किसी भी हिंस्र जानवर से कम नहीं। इसलिए इन पर विजय पाना ही असली पूजा-आराधना है।

श्री मनोहरजी उनके सुपुत्र अनिलजी की जिज्ञासा पर सत्संग में योग-साधना और ध्यान-अभ्यास पर भी चर्चा हुई। माता जी जनक जी तथा पुत्र-वधू श्रीमती प्रमिला जी भी सत्संग और अभ्यास में पूरा रस लेती हैं। मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चों को इस परिवार की प्रशंसनीय सेवाएं मिलती रही हैं।

पूज्यवर की एक विशेष संगोष्ठी सिद्धार्थ एन्क्लेव, आनंद वृंदावन में महाराज श्री पूर्णोत्तमजी के साथ हुई। पूज्य गुरुदेव ने इस अवसर पर कहा- अध्यात्म इस देश के चिंतन का केन्द्र-बिन्दु है। शेष सारी विद्याएं अध्यात्म से जुड़कर ही पूर्णता को प्राप्त करती हैं। महाराज श्री पूर्णोत्तम जी ने पूज्यवर के विचारों का समर्थन करते हुए कहा- आर्ष-वाणी की तरह आयुर्वेद, ज्योतिष मंत्र-तंत्र आदि का उद्देश्य भी आत्म-विज्ञान तक पहुँचता ही है। पूज्यवर के पदार्पण पर महाराज श्री के दिल में अपार प्रसन्नता छलक रही थी। गद्गद् हृदय से आप पूज्यवर के प्रति आभार प्रकट कर रहे थे। आपका सहयोगी पंडित-वर्ग भी पूज्य गुरुदेव के प्रवचन तथा कविताओं के प्रति श्रद्धा-न्त था। महाराज श्री पूर्णोत्तम जी सुप्रसिद्ध यशस्वी श्री उड़िया बाबा की शिष्य परंपरा में हैं। पूजा-अनुष्ठान तथा सेवा को निःस्वार्थ भाव से समर्पित आप दिल्ली-समाज में विशेष सम्मान रखते हैं। मानव-मंदिर मिशन के कार्यकर्ताओं के साथ भी आपका विशेष प्रेम और लगाव है।

जैन आश्रम में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी अपने सहयोगी साधु-साध्वियों के साथ सानंद विराजमान हैं। आश्रम की साधना-सेवा की प्रवृत्तियाँ प्रभावशाली ढंग से चल रही हैं। गुरुकुल के बच्चों के संस्कार-निर्माण की खुशबू से खींची मिस इंडिया कनाडा अंजना डोगरा अपने मित्रों के साथ आश्रम आईं। पूज्यवर के विचारों और कविताओं, खूबसूरत पक्षियों की तरह चहकते बच्चों तथा आश्रम के दिव्य वातावरण का गहरा प्रभाव अपने मानस पर लेकर सभी भाव-विभोर थे।

सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी हिसार में

हरियाणा-पंजाब के अनेक क्षेत्र मानव मंदिर मिशन से जुड़े हुए हैं। उनमें हिसार और सुनाम के मानव मंदिर विशेष रूप से सक्रिय हैं। सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी, साध्वी चांदकुमारी जी तथा साध्वी दीपांजी के साथ हरियाणा-पंजाब के लोगों का खूब पुराना धर्म-प्रेम सम्बन्ध है। वृद्धावस्था के बावजूद आप भी चातुर्मास के सिवाय अपना काफी समय इन क्षेत्रों को देते हैं। आपकी यात्राओं से श्रद्धालु भाई-बहनों में अच्छी प्रेरणा जाग जाती है तथा पूज्य गुरुदेव के पदार्पण से पूर्व अच्छी भूमिका का निर्माण हो जाता है। सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ नवम्बर के चौथे सप्ताह में हिसार पधार गईं हैं। अभी कुछ महीने आपका प्रवास हिसार मानव मंदिर में रहेगा।

चुटकुले

मच्छर ने एक बार पप्पू को दिन में काटा। पप्पू ने हैरान होकर मच्छर से पूछा- “तुम तो रात के वक्त काटते हो न?”
मच्छर ने मायूसी से जवाब दिया- “हां, आजकल घर के हालात खराब हैं, इसलिए ओवर टाइम कर रहा हूँ।”

आदमी ने नरक में यमराज से पूछा- “क्या मैं अपनी पत्नी को फोन कर सकता हूँ?”
“हां, हां क्यों नहीं।”

फोन करने के बाद पति ने पूछा- “मुझे कितना भुगतान करना है?”
“कुछ नहीं।” यमराज बोले- “नरक से नरक तक फ्री है।”

अध्यापक- “आकाश, आज स्कूल देर से क्यों आए हो?”
सर- “रास्ते में बोर्ड लगा था- आगे स्कूल है, धीरे चलें।”



-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए-
मिस इंडिया-कनाडा 2009 सुश्री अंजना डोगरा साथ में हैं सौरभ मुनि जी, योगाचार्य
श्री अरुण तिवारी जी एवं अंजना जी की सहयोगी कु. पूजा शर्मा जी व श्री मोहित मिश्रा जी।



-साध्वी समताश्री जी महाराज एवं मिस इंडिया-कनाडा अंजना डोगरा मानव मंदिर गुरुकुल
के बच्चों के साथ।



-पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज आशीर्वाद स्वरूप गणपति प्रतिमा पूज्य स्वामी
पूर्णोत्तम जी को भेंट करते हुए।



-पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज और पूज्य स्वामी पूर्णोत्तम जी का स्नेह
मिलन आनंद-वृंदावन, दिल्ली में। साथ में हैं सौरभ मुनि जी।